श्रमण १९९२ ०७ (फोल्डर नं. ०२५०११)

सम्पादक - डॉ. अशोक कुमार सिंह

सह सम्पादक – डॉ. शिवप्रसाद

मुख्य टाइटल
अनुक्रमणिका
जैन धर्म और दर्शन की प्रासंगिकता – वर्तमान परिप्रेक्ष्य में – डॉ. इन्दु
वैदिक साहित्य में जैन परम्परा – प्रो. दयानन्द भार्गव
श्वेताम्बर मूलसंघ एवं माथुर संघ – एक विमर्श – डॉ. सागरमल जैन
जैन दृष्टि में नारि की अवधारणा – डॉ. श्री रंजन सूरिदेव
पूर्णिमागच्छ का संक्षिप्त इतिहास – डॉ. शिवप्रसाद
कवि छल्ह कृत अरडकमल्ल का चार भाषाओं में वर्णन – श्री भँवरलाल नाहटा
द्वादशार नयचक्र का दार्शनिक अध्ययन – जितेन्द्र बी. शाह
जैन कर्मसिद्धान्त और मनोविज्ञान – रत्नलाल जैन
पुस्तक समीक्षा
पार्श्वनाथ शोधपीठ के प्रांगण में

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org